मंजू खैरवाल – गुमशुदगी दर्ज
बबली चतुर्वेदी – सेवा पर ध्यान
लेखेन्द्र चौधरी – कारोबार पर ध्यान
नफीस अहमद – फिट एंड फाइन
डॉ. हेमलता – राजनीति रास नहीं आईं
गीता देवी जाट – चमकते सितारे, भरोसा कायम
गीता रानी शर्मा – अब क्या करें
विजय बैंसला – दिन अभी नहीं बदले
भूपेन्द्र सोलंकी – नया नो दिन पुराना सौ दिन
अजय मित्तल – लापता
अनिल गोयल – किराना परचून
बाबूलाल ठेकेदार – कब मिलेगा मौका
शिवसिंह सेजवाल – लगे रहो
भगत सिंह – नारेबाजी कायम
चरण सिंह सोलंकी – कद जरूर बढ़ेगा
सतपाल डागुर –जुगल जोड़ी
धर्मा डागुर – फीकी पड़ी राजनीति
शीला चंदन – नदारद
रविंद्र बेनिवाल – फिर मिली जिम्मेदारी
सत्यप्रकाश शांडिल्य – हम में है दम
सेवक राम डागुर – सत्ता के साथ
एजाज अहमद – नई नवेली
बृजकिशोर – पण्डित जी
नीलम सोबती – लम्बी पारी

शासन के तीरंदाज

हेमराज गुर्जर – पांचों उंगली घी में
रेणु चौधरी – सब कुछ ठीक
लखन लाल कुन्तल – शानदार वापसी
सतेंद्र पाल सिंह – दायरा बढ़ा
गिरधर सिंह – हमें सब पता है
देवेंद्र शर्मा – रोज नई आफत
कुलदीप सिंह चारण – कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा
सुनीलाल – मामला खराब है
पुरषोत्तम चौधरी – चक्का जाम
किरोड़ी लाल मीना – लीकेज ही लीकेज
भवानी मीना – सड़क पे सड़क
ज्ञान सिंह – साठ-गांठ का खेल
कैलाश मीना – नाबाद शतक
हरिओम शर्मा – हरदम व्यस्त
गिरीश कुमार – जांच-पड़ताल
अंजू जैन – मेहनत में दम
सीमा जादौन – बुलन्दी की ओर
प्रकाश बेनिवाल – सिद्धांत के पुजारी

चीरफाड़

डॉ. नमोनारायण मीणा – अब भी चल रही चवन्नी
डॉ. पुष्पेन्द्र गुप्ता – मोटा माल
डॉ. दीपक चौधरी – नए लुक में
डॉ. रामराज मीणा – छोटा डॉन
डॉ. रामहरि मीणा – भोला भंडारी
डॉ. आशीष शर्मा – बढ़ता कारोबार
डॉ. सुनील गुप्ता – शिशु सेवक
डॉ. बृजेश चौधरी – शान-शौकत
डॉ. जयवीर बेनिवाल – कमीशन पर ध्यान
डॉ. रंजना खोखर – काम से काम
डॉ. ओपी मीणा – मस्तमौला
डॉ मनमोहन शर्मा – हवेली पर आ जाना
डॉ. अंकुश – आधा ध्यान मैडम पर
डॉ. रेखा – डॉक्टर पर भारी
डॉ. अंतरसिंह मीणा – बीमार चिकित्सक
डॉ. जलसिंह खटाना – प्रसव पीड़ा
डॉ. अजय गुप्ता – रसूखदार
डॉ. रेवती कोली – राजनीति की राह पर
डॉ. आनन्द – नेता प्रतिपक्ष
डां. विजय मीना – हड्डी जोड़
डॉ. अवधेश सोलंकी – भरोसा तो करो
डॉ नंदमोहन सुमन – नयन सुख
वैद्य प्रमोद शर्मा – जड़ीबूटी का जानकार

करौली

राजनीतिज्ञ

भजन लाल जाटव – छुपे रूस्तम
दर्शन सिंह – पांचों अंगली घी में
हंसराज मीना – अधूरा सपना हुआ पूरा
बृजलाल डिकोलिया – अब कोई नहीं पूछता
कृष्ण चन्द्र पाल – अवसर का राजा
रोहिणी देवी – हम किसी से कम नहीं
रमेशा मीना – नईया डूब गई
लाखनसिह कटकड – वे पटरी को पटरी में लाने की कसरत जारी

शासन के तीरंदाज

नीलाभ सक्सेना – डंडा चल रहा है
हेमराज परिडवाल – धीमी गति के समाचार
प्रेमराज मीणा – काम से काम
महेन्द्र गुर्जर – सरकार के सहारे
शिवचरण मीणा – उंगलियो पर सब हिसाब
धर्मेन्द्र वर्मा – बोझ का मारा
जौहरी लाल मीणा – इन्तजार का मीठा फल
धर्मेन्द्र मीणा – हरफन मौला

चीरफाड़

डॉ. दिनेश मीना – दिन फिर गये
डॉ. रामकेश मीना – मीठी गोली
डॉ. गोविंद गुप्ता – बीआईपी ईलाज
डॉ. अनिता गुप्ता – सदाबाहर
डॉ. सुशील मीना – हरफन मौला
डॉ. लखन लाल मीना – दिन गर्दिस में
डॉ. प्रेमराज मीना – पागलों का सरदार
डॉ. लक्ष्मीकान्त मीना – ऊपर वाले के सहारे
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा – मिश्री के दाने
डॉ. रवन लवानिया – काडे का हाजमा
डॉ. जितेन्द्र मीणा – चमड़ी चमकाओ
डॉ. ओपी मीणा – चीरफाड़
डॉ. बत्ती लाल मीणा – भोला जीव
डॉ. बीएल मीणा – वनवास से वापसी
डॉ. महेन्द्र मीणा – बच गये सहाब

काला कोट

नगेन्द्र व्यास – कबीले का सरदार
ऊधौसिंह – पुराने शिकारी
जयेन्द्र सिंह – सपने रहे अधूरे
रामजीलाल गुप्ता – भगवान के भरोसे
मिथलेश पाल – मुकद्दर का सिकंदर
धीरेन्द्र बैंसला – अच्छे दिन आयेंगे
नवल शर्मा – चुप छिनाल
गोविन्द चतुर्वेदी – चम्पी मालिश
सन्तोष सिंह – नईया हो गई पार
महेन्द्र चतुर्वेदी – मैमोरी जीरो जीबी
आषीष जैन – कट मूसरी
सूनील दत्त शर्मा – दाल भात में मूसल चन्द
गोविन्द शर्मा – शिकार की तलाश
राजेश सिंह – तेल खत्म, कुप्पी खाली
रामगोपाल शर्मा – फौकांटेबाज
रामकुमार सिंह – मर गये भूखे

खाकी

बृजेश ज्योति उपाध्याय – गुण्डों की बना दी पुड़ियां
गुमनाराम – हर जगह फिट
अनुज शुभम – बहारों फूल बरसाओ
अध्यात्म गौतम – पुराने खिलाड़ी फिर आये
रूकमणी गुर्जर – चलती का नाम गाड़ी
चंचल शर्मा – सदर की शेरनी

गंगापुर सिटी

हरीश मीना – अपनी धुन में मस्त
मानसिंह गुर्जर – सरकार में फुल चल रही है
रामकेश मीणा – सरकार बदल गई
शिवरतन अग्रवाल – सरकारी हमारी है
मंजू गुर्जर – राजनीति रास आई
हरिप्रसाद बोहरा – अपना घर भला
संगीता बोहरा – एक चांद और
गीता देवी नरूका – सबका साथ-सबका विकास
सुशील दीक्षित – हमें तो अपनो ने मारा
सी.एल. सैनी – राजनीति रास नहीं आई
हेमन्त शर्मा – आगे देखा जायेगा
डॉ. दिनेश शर्मा – टाईम पास
राकेश राजौरा – अपराधों पर नजर
सन्तराम मीना – मिलनसार
करण सिंह राठौड – अपराधियों पर लगाम
रामकिशोर मीणा – नाकाहू से दोस्ती ना काहू से बैर
बृजेन्द्र मीना – नगर परिषद के फेर में
बिजेश सिहर्रा – गंगापुरदास आया
रामकेश मीना – पानी की चिन्ता
बदन सिंह गुर्जर – सड़कों के बजट का इंतजार
गायत्री बरमेन्द – सबका सम्मान

अजमेर तारागढ़ के तबलची

राजनीतिज्ञ

अनिता भदेल – लम्बा इंतजार
ओम प्रकाश भडाना – नेताजी
रमेश सोनी – साहब मेहरबान
बीपी सारस्वत – पुराने गीत
अरविंद शर्मा – संघ निष्ठा
रचित कच्छावा – जस्ट मेरिड
अनिश मोयल – प्रेस कांफ्रेंस
विजय जैन – अपने दम पर
भूपेन्द्र सिंह राठौड़ – भूलने की आदत
जसराज जयपाल – गुमनाम
डॉ. श्रीगोपाल बाहेती – अपनो से बैर
महेन्द्र सिंह रलावता – उत्तर का नेता
हेमंत भाटी – हमें तो अपनो ने लूटा
प्रताप यादव – बतरस
कैलाश झालीवाल – अध्यक्ष का सपना
गजेन्द्र सिंह रलावता – निगम की दाई
अशोक बिंदल – अब काम
शैलेन्द्र अग्रवाल – नेतागिरी का भूत
अंकुर त्यागी – हमारी छपनी चाहिए
विजय नागौरा – मौका मिलेगा

शासन के तीरंदाज

महेश चन्द्र शर्मा – दमदार
लोकबंधु – समझ नहीं आ रहा..
गजेन्द्र सिंह राठौड़ – धर को लौटे
ज्योति ककवानी – अजमेर की अधिकारी
भानू प्रताप गुर्जर – मैं दिखवाता हूं
संतोष प्रजापति – बल्ले बल्ले
मंयक राज गुर्जर – नई नौकरी

खाकी

ओमप्रकाश – तेज तर्रार
वंदिता राणा – सख्त मिजाज
हिमांशु जांगिड – मिलनसार
दीपक कुमार – सीधा साधा
रामचन्द्र चौधरी – पुराने दिन
रूद्रप्रकाश शर्मा – सनकी
आयुष वशिष्ठ – मस्त मौला
जरनैल सिंह – शांत प्रिय
अशोक बिस्सु – एक्टिव
हुकुम गिरी – जी हुकुम

डेयरी

रामचन्द्र चौधरी – हमें तो अपने गुटो ने लूटा
रामलाल चौधरी – सैम्पल दुकान (दुध भंडार)
लादूराम – साहब बुला रहे
अतुल सक्सेना – फंड की दुकान
श्वेता शर्मा – टेंशन

काला कोट

अशोक सिंह रावत – देवानंद
दीपक गुप्ता – लीडर
राजेश टंडन – अम्बे मां की कृपा
अजय त्रिपाठी – अभी तो मैं जवान हूं
गगन वर्मा – छुपा रूस्तम
नरेन्द्र राठौड़ – नायक
प्रियादर्शी भटनागर – हम किसी से कम नहीं
योगेन्द्र ओझा – क्रांतिवीर
राजा महाजन – अपनी मस्ती
संजय गुर्जर – ऊंची आवाज
के सी जोनवाल – चाणक्य
विवेक पाराशर – बार के राहुल गांधी
प्रशांत यादव – न इधर- न उधर
राजीव भारद्वाज – बार की चिरांद
शशि प्रकाश इंदौरिया – साइलेंट किलर
प्रशांत यादव – छपास की दुकान
जितेन्द्र सिंह खेतावत – वो दिन अब ना रहे
अजय त्रिपाठी – बाबू जी
राहुल भारद्वाज – बगरू का छैल

अंधेर गर्दी

के पी वर्मा – इंतजार का समय आ गया
एम सी बाल्दी – शुभ दिन के इंतजार में
एम एल मीना – इंतजार
बाबूल लाल बैरवा – प्रकरण निस्तारण में देरी
एम के गोयल – किस्मत खा गई
नेहा शर्मा – महिला शक्ति
दिया शर्मा – आराम की जगह
विनित कुमार जैन – मजदूर एकता जिदांबाद

चीरफाड़

डॉ अनिल सामरिया – देवनानी की कृपा
डॉ अरविंद खरे – सुधार की कोशिश करूंगा
डॉ अमित यादव – साथ निभाऐगे
डॉ ज्योत्सना रंगा – टाइम-टाइम की बात
डॉ महेन्द्र जैन – सब सही
डॉ संजीव माहेश्वरी – हरफन मौला
डॉ रोहित अजमेरा – गो गेटवेल
डॉ दिग्विजय सिंह – कान का पर्दा
डॉ रेखा माहेश्वरी – मरीज आये तो सही
डॉ श्याम भूतड़ा – सीधा साधा
डॉ एम पी शर्मा – पेट की गैस
डॉ एस के भास्कर – पुराने जोड़-तोड़
डॉ हमेश्वर हर्षवर्धन – घुटनों का दर्द
डॉ नरेन्द्र शाह – सब का इलाज
डॉ धीरज डागा – मिलनसार
डॉ गोगराज गढवाल – दिमाग का मिस्त्री
डॉ अनिल शर्मा – सटीक ईलाज

रेलवे

राजू भूतडा – गुमनाम
बी सी एस चौधरी – बोम्बे चन्नई एक्सप्रेस
अशोक चौहान – सबका साथ
मोहन चैलानी – यूनियन का बोझ हम उठायेंगे
नेहा गुर्जर – लेडी सिघंम

राजस्व मंडल

हेमंत गैरा – सत्यमेव जयते
महावीर प्रसाद – एन्काउंटर निबंधक
हेमंत स्वरूप माथुर – आई लव अजमेर
पुरूषोतम लाल सैनी – रंगीला छैल की जय
राजेश कुमार दड़िया – सिस्टम सुधारना है
नरेन्द्र गुप्ता – बस कुछ पल
डॉ शिव प्रसाद सिंह – सीखना पड़ेगा
डॉ मदन लाल नेहरा – अब आप बताइये
गौरव बजाड – किस्मत के मारे
भवानी सिंह पालावत – काई करणो है
महेंद्र लोढा – क्या किया जाए
कमला अलारिया – जीना यहां मरना यहां
रामदयाल मीणा – ऑल इज वेल
सुरेंद्र माहेश्वरी – गब्बर की गोली खाली गयी
नरेंद्र सिंह राजावत – साला मैं तो साहब बन गया
लव प्रताप सिंह राठौड़-राजे रजवाडे
मनीष – हैट्रिक विचार
विजय दिवाकर – जय जय श्री राम

लोक सेवा आयोग

केसी मीणा – चल पड़ी
मंजू शर्मा – कविता
संगीता आर्य – रिटायर्ट बॉस
आयूब खान – खिलाड़ी
केसरी सिंह – विवादित
रामनिवास मेहता – सुधार के रहुंगा
आशुतोष गुप्ता – शुद्ध के लिए युद्ध
नवीन आनन्दकर – भोले भाले

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड

कैलाश चन्द्र शर्मा – व्यस्त हस्ती
रश्मि बिस्सा – धनलक्ष्मी

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय

प्रो कैलाश चन्द्र सोढानी – साधारण
प्रिया भार्गव – कभी इधर कभी उधर
सुब्रतो दत्ता – स्टूडेंटों की जान
प्रो शिवप्रसाद – मैनेजमेंट
सुनील टेलर – नई जिम्मेदारी
दिगविजय सिंह चौहान – परेशान
मदन मीणा – अब क्या करे..

एडीए

नित्या के – ऑपरेशन बांडी रिवर
अनिल कुमार पुनिया – कर लेगे...
सूर्य कान्त शर्मा – काम का बोझ
प्रवीण गुगरवाल – ठीक ठाक
खेमराज – आवाप्त
प्रतिभा चूण्डावत – वित्त अधिकारी
यश जोरम – मस्तमौला
मनमोहन मीणा – सीधा साधा
राजेन्द कुडी – दाई मां
राजेन्द्र राठौड़ – भोला भाला
गुरजीत सिंह – मददगार

नरक निगम

ब्रजलता हाडा – आखिरी साल
नीरज जैन – अगला नम्बर
देशलदान – शहर के हालात ....
अनिता चौधरी – कुछ करके दिखाओ
कीर्ति कुमावत – पता नहीं

बांदनवाडा

ब्रह्मदेव कुमावत – गुमनाम है कोई
मनीष कुमार – खेल खिलाड़ियों का
देवेन्द्र शर्मा – फिर से उड़ चला
मनोज आहूजा – जिला बनाकर ही रहेगे
विकम सिंह राठौड़ – किसी की भी नही सुनते
मोहन सिंह राठौड़ – घर राम आए है
दाऊ राम शर्मा – साला झुकेगा नहीं
जयमल रेहलानी – मेला कैसा रहा

शेखावाटी के हुड़दंगी

चूरू रा रसिया

हरलाल सहारण – गले में एक फांस है बस
रफीक मंडेलिया – आईना देख ले पहले
बनवारी लाल शर्मा – तेरा क्या लेता है
ओम सारस्वत – खाली कुर्सी का क्या करें
पंकज गुप्ता – मजे ही मजे है अपन के तो
वासुदेव चावला – सरकार तो है लेकिन मजा नहीं आ रहा
गोविन्द महनसरिया – पायलट ही बनेगे सीएम
मोहम्मद हुसैन निर्वाण – दम है तो आओ सामने
रियाजत खान – राहुल गांधी से गुफ्तगू
मुस्ताक खान – सिर्फ गोविन्द पर ही भरोसा है
बसंत शर्मा – चेयरमैन बनूंगा चाहे कुछ भी हो
विजय शर्मा – सपने तो सपने होते है
हेम सिंह शेखावत – आ गई अपनी सरकार
दुलाराम सहारण – हो गया सो हो गया जी
रतन लाल जांगिड़ – सांप फिर आयेगा क्या
आनंद सैनी – और नहीं तो कोट पहन लेंगे
आरिफ खान – टिकट का हकदार तो हूं
मोहन लाल गढवाल – चुनाव तो लड़ना ही लड़ना है
धर्मेन्द्र बुडानिया – देखते है इधर या फिर उधर
विक्रम कोटवाद – अब कुछ भी नहीं बचा है
अभिषेक चोटिया – भूखे पेट भी भजन तो करूंगा
सीताराम लुगरिया – एक टिकटड़ी का सवाल
विकास मील – फिर आयेगी सरकार
हेमंत सिहाग – इस बार मैदान खाली है
हर्ष लाम्बा – कैसे चलेगी
बनवारी लाल दीक्षित – मेरे से मत उलझा करो
आशीष गौतम – हां मैं खलनायक हूं

जागते रहो

बनवारी खामोश – गज़ल के साथ, गजब की धार
डॉ सुरेंद्र शर्मा – खरा व्यक्तित्व
कमल कोठारी – ज्ञानी पंडित
चंद्र प्रकाश ढंढ – हरफन मौला
नारायण सिंह दिलचस्प – कहाँ गए वो दिन
देवेंद्र जोशी – सिर्फ नाम ही काफी है
राधे श्याम चोटिया – आ देखें जरा किसमें कितना है दम
गुरुदास उपाध्याय – हम है तो क्या गम है
मंगल व्यास भारती – अपना हाथ जगन्नाथ
राजकुमार सारस्वत पार्षद – डर गया सो मर गया
डॉ चंद्रलेखा शर्मा – व्यास-पीठ
संगमानन्द – धुन का धनी
काशीराम पारीक (बीकानेर प्रवासी) – यादें चूरू की
पं. उमेश व्यास – जगतगुरु
गणेश लाटा – हम किसी से कम नहीं
राकेश शर्मा – जागती जोत

झुंझनू

बृजेन्द्र ओला – जीत को मजो किरकिरो होग्यो
राजेन्द्र भांबू – तीसरी बार में नाको पियो
विक्रम सिंह जाखल – खूब चाल री है
इंजी. धर्मपाल गुर्जर – मनचाही होरी है
श्रवण कुमार – 2026 को दे दियो अल्टीमेटम
रीटा चौधरी – जलवा बरकरार
पितराम सिंह काला – किस्मतवाला
भगवानाराम सैनी – जीवण सुधरग्यो
संतोष अहलावत – अपनों की मारी
शुभकरण चौधरी – पुष्पाराज, झूकूंगा नहीं
हर्षिनी कुलहरि – फिर से प्रमुखी पर नजर
नरेन्द्र कुमार – स्कूल पर भी ध्यान देणो पड़ेगो
एमडी चोपदार – मन तो राजी है, पर पार्टी कानी भी देखणों पडे है
दिनेश सुंडा – बडोडा पीछे पड रहा है
बनवारीलाल सैनी – उम्र मारगी
रामावतार मीणा – पूरो ध्यान राखूं हूँ
शरद चौधरी – हरफनमौला खिलाडी
विप्लव न्यौला – गडबड झला, झुंझुनूं बिना मन कोनी लागे
प्यारेलाल ढूकिया – पार्टी ध्यान तो देगी ही
डॉ. राजेश बाबल – पार्टी ध्यान कोनी दे री
डॉ. कैलाश राहड – नौकरी छोडके सुख पाया
शिवकरण जानूं – किस्मत काधनी, टिकट तो लेकर ही रहस्यूं
डॉ. दिलीप मोदी – कोचिंग हाळा खाग्या
राजेश अग्रवाल – बंटी-बबली से पीडित
राजन चौधरी – सरकारी प्लॉट ले डूबसी
रवि बिरमीवाला – म्हारला ई बेरी होरया है
दीपेन्द्र बुडानिया – कलाकार, हर रोल के लिए तैयार
डॉ. राजवीर राव – कुर्सी तो आछी है
डॉ. छोटेलाल गुर्जर – आपणै से सारा राजी
उमेश जालान – परफेक्ट अफसर
डॉ. मक्खनलाल – आपका काम फोन पर ही हो जाएगा
डॉ. डीएन तुलस्यान – म्हारला भायला पर किताब लिखूंगा
निर्मल कालेर – पापा कहते है बेटा बडा नाम करेगा
सुरेन्द्र – मीठे गुड की मार सदा बीमार
दलीप पूनिया – ना काहू से दोस्ती ना काहू से बैर

राजधानी

करप्शन को आपने संस्थागत बना दिया : धारीवाल

जयपुर। विधानसभा में एप्रोप्रिएशन बिल पर बहस के दौरान शांति धारीवाल ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि करप्शन को आपने संस्थागत बना दिया। एक दिन किसी नेता पर भ्रष्टाचार का आरोप लगा दो और दूसरे रोज ही उसे पार्टी में ले लो। भाजपा को आपने भ्रष्टाचारियों का आश्रम बना दिया। देश की राजनीति को आपने कम्युनलाइज कर दिया। सारी संवैधानिक संस्थाओं को कब्जे में ले लिया और माथे पर संविधान लगाने का ड्रामा करने वाले लोगों ने सबसे ज्यादा संविधान का मजाक उड़ाया। लोकतंत्र की हत्या की। भाजपा के नेताओं ने जहरीले सांप्रदायिक भाषण दिए और इतिहास में यह पहली बार है कि संसद में चुनाव की वोटर लिस्ट के बारे में चर्चा हो रही है।

- **आईफा पर आपने 100 करोड़ से ज्यादा खर्च कर दिए, लेकिन आपसे खाटूश्याम जी और गोविंददेव जी के लिए 100 करोड़ नहीं दिए गए : जूली**
- **गहलोत केवल बजट पढ़ने या एप्रोप्रिएशन बिल पारित करवाने के लिए आते थे। उन्हें कोई चिंता ही नहीं थी कि सदन में क्या हो रहा है, क्या नहीं हो रहा है : संदीप शर्मा**

उन्होंने कहा कि जीएसटी में जो आपका अनुमान था उसमें 1700 करोड़ कम मिला। कॉर्पोरेट टैक्स में 3500 करोड़ पर कम मिलेगा। यूनियन एक्साइज ड्यूटी में 50 पैसा कम मिलेगा और सोशल सर्विसेज में तो 2000 रुपए काट लिए। यह तो पहले इंजन की हालत है, दूसरा इंजन तो आपका फेल है। मैं आपको पहले इंजन की करतूतें बता रहा हूं।

विधानसभा में एप्रोप्रिएशन बिल पर चर्चा के दौरान नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि आईफा पर आपने 100 करोड़ से ज्यादा खर्च कर दिए, लेकिन आपसे खाटूश्याम जी और गोविंदेव जी के लिए 100 करोड़ नहीं दिए गए। लेकिन आईफा के लिए फाइल को बुलेट ट्रेन की तरह चलाया। आईफा में आपने राजस्थान का प्रमोशन आयोजन किया या सात लाख रुपए के गोल्डन पास आपने जनता की गाढ़ी कमाई पर बांटे, ये पास मंत्रियों तक को नहीं मिले। विपक्ष का नाम तो छोड़ ही दीजिए।

जूली ने कहा कि इस आयोजन में कोई भी फर्स्ट ग्रेड का एक्टर नहीं आया, केवल सेकेंड ग्रेड वाले एक्टर आए। फर्स्ट ग्रेड एक्टर में सिर्फ शाहरुख खान थे। इस बीच किसी ने माधुरी का नाम लिया तो जूली ने कहा की आजकल माधुरी दीक्षित भी सेकेंड ग्रेड में ही है। उनका समय गया। आईफा के पोस्टर में फोटो किसकी थी और तवज्जो किसको मिली यह तो सब जानते हैं। सोनू निगम को भी बुलाना चाहिए था। एक महीने में ऐसा क्या हो गया? इन्वेस्टर समिट में उसे बुलाया, आईफा में नहीं बुलाया। यदि किसी ने कोई सुझाव दिया या नहीं बनी तो उसे रोक दिया गया। ऐसा नहीं करना चाहिए था। गौरतलब है कि सोनू निगम ने एक दिन पहले सोशल मीडिया पर आईफा को लेकर सवाल उठाए थे।

भाजपा विधायक संदीप शर्मा ने कहा कि अशोक गहलोत 5 साल में कोई पांच बार ही सदन में आए होंगे। कितने गंभीर थे इससे पता लगता है। गहलोत केवल बजट पढ़ने या एप्रोप्रिएशन बिल पारित करवाने के लिए आते थे। उन्हें कोई चिंता ही नहीं थी कि सदन में क्या हो रहा है, क्या नहीं हो रहा है। 8 करोड़ जनता के प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं, केवल कुछ दिन आए होंगे। संदीप शर्मा ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने 5 साल तक लोगों को भरमाया। केवल झूठी घोषणाओं के अलावा कुछ नहीं किया। आखिरी बजट में बे सिर पैर की खूब सारी घोषणाएं कर दी।

दिया कुमारी को ट्रॉफी सौंपी

जयपुर। पेसिफिक एशिया ट्रैवल राइटर्स एसोसिएशन ने राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए किए गए सराहनीय कार्यों के लिए उप मुख्यमंत्री और पर्यटन मंत्री दिया कुमारी को इसी महीने गुरुवार को मिले "वीमन टूरिज्म मिनिस्टर ऑफ द ईयर, इंडिया" की ट्राफी बुधवार को शासन सचिव रवि जैन ने सौंपी।

उल्लेखनीय है कि यह सम्मान आईटीबी बर्लिन, जर्मनी में सेशेल्स के पूर्व पर्यटन मंत्री, डॉ. एलन सेंटएन्ज द्वारा दिया गया। जिसे उप मुख्यमंत्री की ओर से पर्यटन विभाग के अधिकारी, अतिरिक्त निदेशक पर्यटन आनंद त्रिपाठी, उप निदेशक पर्यटन उपेन्द्र सिंह शेखावत ने यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किया था।

राजस्थान सरकार प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए उत्कर्ष कार्य कर रही है। राज्य सरकार, केंद्र सरकार के साथ मिलकर राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विस्तृत कार्य योजना बनाकर काम कर रही है। राजस्थान के पर्यटन विभाग द्वारा देश और दुनिया के विभिन्न पर्यटन मंचों पर राजस्थान के पर्यटन की ब्रांडिंग की जा रही है। इसी के तहत पेसिफिक एरिया ट्रैवल राइटर्स संगठन (पटवा) ने राजस्थान को यह सम्मान प्रदान किया हैं।

बिना अवाप्ति और मुआवजे के निर्माण हटाने पर रोक

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने एनएच 52 से उदयपुरा मोड तक की रोड को बिना अवाप्त किए चौड़ी करने के मामले में प्रमुख पीडब्ल्यूडी सचिव से तथ्यात्मक रिपोर्ट तलब की है। अदालत ने विभाग के प्रमुख सचिव को कहा है कि जरूरत हो तो वह स्वयं मौके पर विजिट करे और याचिकाकर्ताओं को मुआवजा देने के संबंध में अपनी टिप्पणी पेश करे। अदालत ने प्रमुख सचिव को कहा कि वे आगामी सुनवाई 1 अप्रैल को व्यक्तिगत या वीसी के जरिए अदालत में पेश हो। तब तक अदालत ने सडक चौडा करने के लिए याचिकाकर्ताओं के निर्माण को ध्वस्त नहीं करने को कहा है। जस्टिस सुदेश बंसल ने यह आदेश झाबरमल व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि मामले में पीडब्ल्यूडी की ओर से दी गई जानकारी संतोषजक नहीं है। ऐसे में याचिकाकर्ताओं के निर्माण को हटाने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

याचिका में अधिवक्ता निखिल सैनी ने अदालत को बताया कि पीडब्ल्यूडी ने एनएच-52 से उदयपुरा मोड तक सडक़ को चौडा करना तय किया था।

एक घंटे में तीन विधेयक पारित, पक्ष-विपक्ष में तकरार, विपक्ष ने किया वॉक आउट

जयपुर। राजस्थान विधानसभा में बुधवार को शून्यकाल में सरकार ने राजस्थान माल और सेवा कर संशोधन विधेयक-2025, भरतपुर विकास प्राधिकरण-2025 और बीकानेर विकास प्राधिकरण विधेयक-2025 पेश किए गए, ये तीनों विधेयक ध्वनिमत से पारित किए गए। हालांकि, इन तीनों विधेयकों के लिए चर्चा के लिए दिए गए समय को लेकर सदन में तकरार हुई।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि एक घंटे में तीन विधेयक पारित करवाए गए हैं, बिना चर्चा के महत्वपूर्ण विधेयकों को पारित करवाना प्रदेश की जनता के हितों से खिलवाड़ है। उन्होंने इसका पुरजोर रूप से विरोध किया।

उन्होंने कहा कि इन विधेयकों को जनमत जानने के लिए या प्रवर समिति को भेजा जाए, इसके बाद विपक्ष ने सदन से वॉक आउट किया।

इस पर संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि विकास का विरोध करना ही कांग्रेस की नीति बन गई है। उन्होंने बिना कारण बहिर्गमन करने पर निंदा प्रस्ताव भी पढ़ा। हालांकि, कुछ देर बाद विपक्ष के सदस्य वापस सदन में आ गए।

सरकार की गलती पर पर्दा डालने का प्रयास : जूली

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा, भरतपुर और बीकानेर में विकास प्राधिकरण बनाने का फैसला बड़ा है। सरकार बिना सदन में चर्चा करवाए इसे लागू कर रही है, इतने दिन से विधानसभा चल रही है, लेकिन आज जल्दबाजी में विधेयक लाकर पास करवाए जा रहे हैं। यह सरकार की गलती है, जिस पर पर्दा डाला जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्राधिकरण बनाने के लिए सरकार पहले अध्यादेश लाई, जिसकी जरूरत नहीं थी। सदन शुरू होने से छह सप्ताह पहले विधेयक को टेबल करना होता है, लेकिन आज एक घंटे में तीन महत्वपूर्ण बिल पारित किए गए हैं। इससे पहले मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने सदन में भरतपुर विकास प्राधिकरण विधेयक, 2025 विचार के लिए रखा।

भरतपुर विधायक डॉ. सुभाष गर्ग ने कहा कि यह राजनीतिक निर्णय है, इसके मसौदे में कई गलतियां हैं, जिन्हें दुरुस्त किया जाना चाहिए। उन्होंने सरकार की मंशा पर भी सवाल खड़े किए। शिव विधायक ने कहा, आप पहले इस पर यह अध्यादेश लाए थे, विधानसभा का सत्र आने वाला था, थोड़ा रूककर विधानसभा में विधेयक लाया जाता तो इस पर चर्चा हो पाती।

उन्होंने कहा, विकास प्राधिकरण बनने पर किसानों की जमीन ली जाती है, लेकिन किसानों को दे क्या रहे हैं. उस पर चर्चा होनी चाहिए. स्थानीय लोगों से भी राय ली जानी चाहिए।

तीव्र विकास के लिये बनाया प्राधिकरण : खर्रा

मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने कहा, बड़े शहरों में तीव्र विकास की दरकार है, नगरों का तेजी से विस्तार हो रहा है। पहले यूआईटी थी, भरतपुर के सुनियोजित विकास के लिए विकास प्राधिकरण की स्थापना की दरकार महसूस की जा रही थी। इसकी घोषणा मुख्यमंत्री ने 2024-25 के बजट में की थी। उन्होंने भरतपुर विकास प्राधिकरण विधेयक-2025 पारित करने का प्रस्ताव रखा, जिसे ध्वनिमत से पारित किया गया।

सदन में बीकानेर विकास प्राधिकरण विधेयक-2025 पारित किया गया। इससे पहले सूरतगढ़ से कांग्रेस विधायक डूंगरराम गेदर ने इसे बिना तैयारी जल्दबाजी में लिया गया फैसला बताया। बूंदी से विधायक हरिमोहन शर्मा ने बिना पर्याप्त चर्चा विधेयक पारित करने पर सवाल उठाए। इस बीच हरिमोहन शर्मा की मंत्री जोगाराम पटेल से तीखी नोंक-झोंक हुई। हरिमोहन शर्मा बोले, ऐसे दो मिनट में कानून पास होते हैं क्या? जिस पर स्पीकर ने कहा पहले भी ऐसा हुआ है।

हरिमोहन शर्मा ने कहा, भरतपुर और बीकानेर में विकास प्राधिकरण बनाने का फैसला जल्दबाजी में लिया गया। सरकार की नीयत में खोट है, इसलिए यह प्राधिकरण बनाए गए हैं। उन्होंने जल्दबाजी में विधेयक पास करवाने को लोकतंत्र की हत्या करार दिया।

माल और सेवाकर संशोधन विधेयक पारित

वित्त मंत्री दीया कुमारी ने राजस्थान माल और सेवा कर संशोधन विधेयक -2025 सदन में पेश किया। भाजपा विधायक दीप्ती किरण माहेश्वरी ने मार्बल में मंदी का जिक्र करते हुए इसे मंदी से बाहर निकालने में सहयोग देने की मांग रखी। कांग्रेस विधायक रोहित बोहरा ने कहा कि सरकार ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को खत्म करना चाहती है। उन्होंने इस पर जनमत जानने की मांग रखी. वहीं, कांग्रेस विधायक हरिमोहन शर्मा ने जीएसटी को गब्बर सिंह टैक्स बताया और कहा कि इससे इंस्पेक्टर राज को बढ़ावा मिला है।